नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

समृद्ध किसान से समृद्ध मध्य प्रदेश की राह

मध्य प्रदेश, जिसे देश का 'सोया स्टेट' और 'गेहूं का भंडार' कहा जाता है, आज अपने विकास की दिशा में एक नए और निर्णायक मोड़ पर खड़ा है. 11 जनवरी 2026 को भोपाल के जंबूरी मैदान से मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव' द्वारा 'कृषक कल्याण वर्ष 2026' का शुभारंभ केवल एक सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने का दूरदर्शी संकल्प है. यह पहल इस सच्चाई को स्वीकार करती है कि मध्य प्रदेश की आर्थिक मजबूती का आधार आज भी किसान और खेती ही हैं.मध्य प्रदेश की अर्थव्यवस्था में कृषि की भूमिका किसी भी अन्य राज्य की तुलना में कहीं अधिक गहरी और व्यापक है.

बजट 2025-26 और ताजा अनुमानों के अनुसार राज्य की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में कृषि और उससे जुड़े क्षेत्रों का योगदान लगभग 44 से 47 प्रतिशत के बीच है, जो राष्ट्रीय औसत से ढाई गुना से भी अधिक है. यही नहीं, प्रदेश की करीब 70 प्रतिशत आबादी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से खेती और पशुपालन पर निर्भर है. सोयाबीन, दलहन और चना उत्पादन में देश में पहला स्थान और गेहूं उत्पादन में अग्रणी राज्यों में शामिल होना इस बात का प्रमाण है कि मध्य प्रदेश वास्तव में भारत की खाद्य सुरक्षा की रीढ़ है.

इसी पृष्ठभूमि में 'कृषक कल्याण वर्ष 2026' को देखा जाना चाहिए. मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का स्पष्ट दृष्टिकोण है कि किसान को केवल अनुदान या राहत का पात्र नहीं, बल्कि आर्थिक विकास का साझेदार बनाया जाए. इस वर्ष की थीम 'समृद्ध किसान-समृद्ध प्रदेश' इसी सोच को दर्शाती है. सरकार का रोड मैप तकनीक, विविधीकरण, अंतरराष्ट्रीय अनुभव और मूल्य संवर्धन जैसे आधुनिक स्तंभों पर टिका है. ड्रोन तकनीक, एग्री-टेक स्टार्टअप और हाइड्रोपोनिक्स को बढ़ावा देकर खेती को युवा पीढ़ी के लिए आकर्षक और लाभकारी व्यवसाय बनाने का प्रयास सराहनीय है.

खेती के विविधीकरण पर दिया गया जोर भी समय की मांग है. पारंपरिक फसलों के साथ उद्यानिकी, डेयरी और मत्स्य पालन को प्रोत्साहन देकर किसानों की आय को मौसम और बाजार के जोखिम से बचाने की रणनीति स्पष्ट दिखाई देती है. साथ ही, प्रगतिशील किसानों को इजराइल और ब्राजील जैसे देशों में आधुनिक सिंचाई और बीज प्रबंधन का प्रशिक्षण देने की घोषणा यह दर्शाती है कि राज्य सरकार वैश्विक श्रेष्ठ अनुभवों को स्थानीय खेतों तक पहुंचाना चाहती है.

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में चलाई जा रही किसान हितैषी योजनाएं इस विजन को जमीन पर उतारने का काम कर रही हैं. मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना, कृषि उन्नति योजना के तहत बोनस, रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन जैसी योजनाएं किसानों की आय में सीधा इजाफा कर रही हैं. सिंचाई क्षमता को 58 लाख हेक्टेयर से अधिक तक ले जाने का लक्ष्य और प्राकृतिक खेती मिशन, दीर्घकाल में खेती को टिकाऊ और पर्यावरण-संतुलित बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं.

कुल मिलाकर, 'कृषक कल्याण वर्ष 2026' मध्य प्रदेश के विकास मॉडल का केंद्र बिंदु किसान को बनाता है. मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का किसान हितैषी विजन यह मानता है कि जब किसान की आमदनी बढ़ेगी, तभी गांव का बाजार मजबूत होगा और राज्य की जीडीपी को नई गति मिलेगी. यदि घोषित नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन होता है, तो यह वर्ष न केवल किसानों के लिए, बल्कि पूरे मध्य प्रदेश के लिए आर्थिक परिवर्तन का वर्ष साबित हो सकता है.

कांग्रेस में घमासान

अपनों पर सितम गैरों पर करम

दिलीप झा

अजीब दौर से गुजर रही कांग्रेस की राजनीति में मध्यप्रदेश कांग्रेस में भी कशमकश बहुत है. आपसी खींचतान की वजह से कांग्रेस के नेताओं में एक दूसरे को निपटाने की जबरदस्त बौखलाहट है. ऐसा प्रतीत होता है कि कांग्रेस एक पैर से भी नहीं चल पा रही है. वजह स्पष्ट है भारी गुटबाजी और इसके कारण कांग्रेस कार्यकर्ताओं में घोर निराशा है. कांग्रेस के विश्वस्त सूत्रों का कहना है कि मध्यप्रदेश में कांग्रेस को जीवित रखना है तो कमलनाथ रूपी आक्सीजन से ही यह संभव है. कमलनाथ एक सुलझे हुए उद्योगपति और राजनीतिक पृष्ठभूमि से हैं और सोनिया गांधी के बेहद करीबी भी हैं.

वर्ष 2020 में कमलनाथ की सरकार गिराने में तत्कालीन कांग्रेसी नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया का हाथ कम और कांग्रेस के क्षत्रप नेताओं की भूमिका ज्यादा थी. क्योंकि कमलनाथ उनकी मनमानी और गलत कार्यों पर अंकुश लगा रहे थे. जाहिर है कमलनाथ के पास दूरदर्शी सोच के साथ कांग्रेस को आगे ले जाने का लंबा अनुभव है. वह केंद्र में वर्षों मंत्री रहे हैं. यही कारण है कि मध्यप्रदेश की जनता ने उन्हें वर्ष 2018 में सरकार बनाने का सुअवसर दिया था. लेकिन वर्ष 2020 में कांग्रेस में ओछी राजनीति करने वाले नेताओं ने अपनों पर सितम गैरों पर करम दिखाकर कमलनाथ की सरकार गिरा दी.

वर्ष 2023 में हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस 65 सीटों पर सिमट गई तो हार का ठीकरा कमलनाथ पर फोड़ दिया. आनन फानन में कांग्रेस हाईकमान ने मध्यप्रदेश में जीतू पटवारी को अध्यक्ष पद की कमान दे दी लेकिन जीतू के नेतृत्व वाली कांग्रेस लोकसभा 2024 के चुनाव में टांय-टांय फिस्स साबित हुई. एक भी सीट मध्यप्रदेश से नहीं जीत पाई तो कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं ने प्रदेश नेतृत्व की कार्यशैली पर सवाल उठाए और कहा कि हार के लिए जवाबदेह किसे ठहराया जाए.

सूत्र बताते हैं कि हाल ही में पीसीसी में कार्यकारिणी की बैठक में जीतू पटवारी पर विभिन्न जिलों से आए कांग्रेस नेताओं ने जोरदार हमला किया कि जिला अध्यक्षों की नियुक्तियों में जबरदस्त धांधली हुई है, इसलिए इन्हें रद्द किया जाए. आम कार्यकर्ताओं में नाराजगी है तो पार्टी मजबूत कैसे होगी. इस बात पर कांग्रेस हाईकमान को गंभीरता से विचार करना चाहिए कि प्रदेश में पार्टी का नेतृत्व करने वाले से नाराजगी है तो आगे की रणनीति क्या होनी चाहिए. इस बात से कोई इंकार नहीं कि मध्यप्रदेश में अभी भी कांग्रेस का जनाधार गांव-गांव तक है लेकिन वे हतोत्साहित हैं, उत्साहित नहीं. इसके पीछे के कारणों का पता कांग्रेस हाईकमान को लगाना चाहिए.

(लेखक नवभारत भोपाल के संपादक हैं)

मध्यप्रदेश बीजेपी में भी सबकुछ ठीक नहीं, गुटबाजी चरम पर

मध्यप्रदेश बीजेपी में भी सबकुछ ठीक नहीं है. बीजेपी के सूत्र बताते हैं कि शिवराज सिंह चौहान के मुख्यमंत्री काल में इतनी गुटबाजी नहीं थी जितनी अभी हो गई है. वजह असंतोष है. बीजेपी के वरिष्ठ नेताओं में भी गुटबाजी चरम पर है. वे क्षत्रप स्टाइल वाली नेतागिरी से बाहर निकल ही नहीं पा रहे हैं और इस वजह से पार्टी को भारी नुकसान हो रहा है. मध्यप्रदेश को अगर पांच संभागों में बांट कर देखा जाए तो यहां क्षेत्रीय गुटबाजी की राजनीति से अपनी ताकत दिखाई जाती है. यह भी सच है कि शिवराज सिंह को छोड़कर किसी नेता की तरफ से समग्र प्रदेश की राजनीति और ताकत दिखाने की कोशिश भी नहीं की गई. वहीं, सिंधिया के साथ बीजेपी में आए कांग्रेसी नेता भाजपा में उपेक्षित हैं. उन्हें भाव नहीं दिया जा रहा है. वैसे मध्यप्रदेश में अपने ही नेता के बढ़ते वर्चस्व को कम करने का कुचक्र वर्षों से चलता आ रहा है. सूत्र बताते हैं कि वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में नरोत्तम मिश्रा को भी इसी ओछी राजनीति का शिकार बनाकर उन्हें हराया गया. अब शिवराज सिंह चौहान के करीबी रहे पूर्व मंत्रियों की उपेक्षा हो रही है. जबकि वे विधायक हैं लेकिन जिले की मीटिंग में भी उन्हें नहीं बुलाया जाता है. इस तरह की राजनीति से पार्टी की जमीनी ताकत अंदर से कमजोर हो रही है. गोपाल भार्गव, ठाकुर भूपेंद्र सिंह, रामपाल सिंह और प्रभूराम चौधरी जैसे कद्दावर नेताओं की अपनी लोकप्रियता है, इसे कम नहीं आंका जाना चाहिए. वैसे यह भी कहा जाता है कि इस अजब-गजब मध्य प्रदेश में कब क्या हो जाए कोई नहीं जानता. सूत्र बताते हैं कि बीजेपी संगठन और आरएसएस अपने तरीकों से गुटबाजी को खत्म करने का प्रयास कर रहा है लेकिन इसमें उन्हें सफलता नहीं मिल रही है.

विंध्य की डायरी

विंध्य में भाजपा नए नेतृत्व की तलाश में जुटी

डॉ. रवि तिवारी

विंध्य में तीन इंजन की सरकार वाली भारतीय जनता पार्टी इन दिनों नए स्थानीय नेतृत्व की तलाश में अंदरूनी तौर पर विचार मंथन में जुटी हुई है. आए दिन केंद्रीय नेताओं की आमद से यह संकेत मिल रहे हैं कि पार्टी नेताओं के बीच बढ़ रही आपसी खींचतान पार्टी संगठन को रास नही आ रही है.

देखने में यह भी आ रहा कि पार्टी के लिए तन,मन,और धन से पूरी निष्ठा से काम करने वाले कार्यकर्ताओं का अपने नेताओं से मोहभंग होता जा रहा है. इसकी एक वजह पार्टी में बाहर से आए नेताओं का संगठन के कार्यों में बढ़ रहा हस्तक्षेप है. निर्वाचित जनप्रतिनिधि भी ऐसे लोगों को विशेष महत्व दे रहे हैं. जो मूल भाजपा के नेताओं और कार्यकर्ताओं को पसंद नहीं आ रहा है. इसके अलावा केंद्रीय नेतृत्व द्वारा निर्धारित कार्यक्रमों के अमल की मजबूरी भी नेताओं कार्यकर्ताओ को रास नही आ रही है. उनका कहना है कि स्थिति के मुताबिक कार्यक्रमों को तय किया जाना पार्टी की रणनीति का हिस्सा रहा है, लेकिन अब स्थानीय स्तर पर गैरजरूरी कार्यक्रम भी पार्टी स्थानीय नेताओं के ऊपर लाद देती है. जिससे कार्यकताओं की परेशानी बढ़ जाती है. फिलहाल भाजपा समाज के सभी स्थापित वर्गों में पैठ बनाए रखने के लिए प्रभावशाली लोगों पर नजर बनाए हुए हैं. ऐसी संभावना है कि जल्द ही इसके परिणाम देखने को मिलेंगे.

गडराकांड की हवा निकली

मऊगंज जिले के गडरा में गए आदिवासियों के साथ माफियो के संघर्ष की कहानी पर हाईकोर्ट ने सरकार की स्टेटस रिपोर्ट के बाद बड़ा विराम लगा दिया है. कांग्रेस के पूर्व विधायक सुखेन्द्र सिंह बन्ना की सीबीआई जांच की कोशिशों पर फिलहाल तुषारापात हो गया है. कोर्ट ने सरकार की कार्यवाई को उचित मानते हुए सीबीआई जांच की मांग को खारिज कर दिया है. इस लोमहर्षक घटना में कई आदिवासी परिवार के वारिस भी नही बचे हैं. ज्यादातर के शव फाँसी में झूलते मिले थे. इस घटना में पुलिस के एक एएसआइ की भी मौत भी हो गई थी.प्राथमिक तौर पर इसे दो वर्गों के बीच वर्ग संघर्ष माना जा रहा था.

सतना में अवैध हथियार बने जी का जंजाल

पुलिस की नशा के खिलाफ सख्त मुहिम के बाद सतना में आए दिन नए युवा अवैध हथियारों का खुला प्रदर्शन करते पकड़े जा रहे हैं. जानकारों का मानना है कि नशा के कारोबार में कोई अड़चन न आए इसलिए इस काले कारोबार में सामने आने वाले रास्ते से हटाने के उद्देश्य से हथियार उपलब्ध कराए जा रहे हैं. फिर हथियार एक बार मिल जाने पर नशे में उसका प्रदर्शन आम है. इतना ही नही पिछले दिनों कुछ आत्महत्या के मामलों में भी ऐसे ही हथियारों का प्रयोग हुआ है. जो चिंता का विषय बनता जा रहा है.

ट्रंप क्यों चाहते हैं ग्रीनलैंड पर कब्जा

वेनेजुएला में विश्व का सबसे बड़ा तेल भंडार है तो ग्रीनलैंड की रेयर अर्थ पर भी ट्रंप अपना कब्जा चाहते हैं.

वेनेजुएला के राष्ट्रपति का अपहरण कर वहां के तेल भंडार पर कब्जा करनेवाले अमेरिकी प्रेसीडेंट ट्रंप की निगाह अब ग्रीनलैंड पर है जिसे वह डेनमार्क से खरीदना या सीधे हथियाना चाहते हैं. 1946 में जब जर्मनी ने डेनमार्क पर हमला किया था तब अमेरिका ने ग्रीनलैंड की रक्षा की जिम्मेदारी ली थी और वहां सैनिक अड्डा बनाया था. तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति हैरी ट्रुमेन ने 100 मिलियन डॉलर का स्वर्ण देकर ग्रीनलैंड खरीदने का प्रस्ताव रखा था जिसे डेनमार्क ने ठुकरा दिया था. 60 लाख लोगों की आबादी वाले ग्रीनलैंड की राजधानी रेक्जेविक है. भारत से अमेरिका जानेवाला विमान ग्रीनलैंड और फिर कनाडा के ऊपर से होता हुआ न्यूयार्क पहुंचता है. ट्रंप ने कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से अमेरिका ग्रीनलैंड हासिल करना चाहता है. अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने कहा कि ग्रीनलैंड को खरीदने की ट्रंप की योजना है. डेनमार्क के अधिकारियों ने कहा कि ग्रीनलैंड की जनता को आत्मनिर्णय का अधिकार है. गत वर्ष वहां हुए जनमत संग्रह में 85 प्रतिशत लोगों ने अमेरिका के कब्जे की किसी भी योजना का विरोध किया था. ग्रीनलैंड के प्रधानमंत्री जेन्स फ्रेडरिक नील्सेन ने गत सप्ताह कहा कि हमारा देश बिकाऊ नहीं है. ग्रीनलैंड की विदेश नीति, रक्षा व अन्य मामलों को डेनमार्क संभालता है. डेनमार्क पर ही ग्रीनलैंड की स्कूलों का खर्च, रसोई गैस की सप्लाई व सामाजिक सेवाओं की जिम्मेदारी है. अमेरिका इसलिए ग्रीनलैंड पर कब्जा करना चाहता है क्योंकि वहां से उसे एटलांटिक महासागर में जाने के लिए नौसैनिक गलियारा मिलेगा. सबसे बड़ी बात है कि बर्फ से ढके ग्रीनलैंड में दुर्लभ खनिज का बड़ा भूमिगत भंडार है. इसका उपयोग बैटरीज, सेलफोन, ई-वाहनों तथा अन्य हाईटेक आइटम के लिए होता है. वेनेजुएला में विश्व का सबसे बड़ा तेल भंडार है तो ग्रीनलैंड की रेयर अर्थ पर भी ट्रंप अपना कब्जा चाहते हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

महापालिका राजनीति का झमेला अंबरनाथ में बीजेपी का खेला

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, बीजेपी के करकमलों में कमाल का करिश्मा है. यह कितना बड़ा जादू है कि महाराष्ट्र के अंबरनाथ में 12 कांग्रेसी पार्षद अचानक बीजेपी में शामिल हो गए.'

हमने कहा, 'इसे कहते हैं ऑपरेशन लोटस जो हमेशा सक्सेसफुल हो जाता है. आप जानते होंगे कि कमल की सुंदरता पर मुग्ध होकर भौंरा उस पर बैठ जाता है. जब रात में कमल की पंखुड़ियां सिकुड़ जाती हैं तो भौंरा उसमें कैद हो जाता है. अन्य पार्टियों के नेताओं को बीजेपी सहज ही आकर्षित कर लेती है. उसकी पतितपावनी धारा में डुबकी लगाने से पापियों का मन भी पवित्र हो जाता है. लोग कहते हैं कि बीजेपी की वाशिंग मशीन में जाते ही सारे दाग-धब्बे गायब हो जाते हैं. विपक्ष के दागदार नेता ईडी और सीबीआई से बचने के लिए बीजेपी की शरण लेते देखे गए हैं. बीजेपी उनका सारा संकट दूर कर देती है. अंबरनाथ में कांग्रेसजनों ने नेहरू-गांधी की सेक्यूलर विरासत भुला दी. राहुल गांधी की मोहब्बत की दुकान से मुंह मोड़ लिया. सोनिया को सन्न करके रख दिया. खड़गे का खड़ग भी काम नहीं आया. ये दर्जनभर कांग्रेसी पार्षद भगवे की ओर भाग गए.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, पहले तो कांग्रेस ने अपने सभी 12 निर्वाचित पार्षदों को बीजेपी के साथ युति करने पर निलंबित कर दिया लेकिन यह दांव उल्टा पड़ गया. ये सभी पार्षद बीजेपी में शामिल हो गए. एकनाथ शिंदे को इस तरीके से बीजेपी ने उनके गढ़ में झटका दे दिया. यद्यपि शिवसेना (शिंदे) 27 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी बनी लेकिन वह 30 सीटों के बहुमत के आंकड़े तक पहुंच नहीं पाई.'

हमने कहा, 'बीजेपी ने चतुराई से काम लिया और शिंदे ताकते रह गए. अंबरनाथ में जो खेला हुआ, उससे कांग्रेस आलाकमान भी दिल्ली में दहल गया होगा. ऐसा कांड कहीं भी हो सकता है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, अंबरनाथ के प्रकरण से हमें याद आया कि नरगिस व राजकपूर की एक पुरानी फिल्म का नाम 'अंबर' था. शम्मी कपूर ने फिल्म तीसरी मंजिल में गाया था दीवाना मुझसा नहीं इस अंबर के नीचे ! एक अन्य गीत था- नीले-नीले अंबर पर चांद जब आए, प्यार बरसाए, हमको तरसाए ! इस समय अंबरनाथ के अंबर पर भाजपा का भगवा छा गया है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12138 - डॉ. सागर खादीवाला

बाएं से दाएं
1. इस समय, अभी 3. ऐसी वस्तु जो लीपापोती या चुपड़ी जाए 4. किसी व्यक्ति या वस्तु का बोध कराने वाला शब्द, संज्ञा, यश, कीर्ति 6. मिट्टी 7. पुष्परज, वह रज जो फूलों के बीच केसरों पर जमी रहती है (सं.) 8. निरपराध (उर्दू). 10. पिस्तौल 12. प्रसिद्ध (उर्दू), 14. वह स्थान जहां से आगे की ओर दो मार्ग जाते हो 16. बहादुर, पराक्रमी 17. हिंसक जानवरों के रहने की जगह 18. हिलोर, तरंग 21. निर्धन, दीन-हीन (उर्दू) 23. दबने पर बीच से झुकना 24. लड़की, लाड़ली लड़की

ऊपर से नीचे
1. थाती, धरोहर (उर्दू) 2. गोली, बड़ी नामक पकवान 3. लिखने वाला, ग्रंथ लिखने वाला 4. अपनी मांग, शिकायत आदि की ओर ध्यान दिलाने के लिए बार-बार बुलंद की जाने वाली आवाज 5. घमंडी, अभिमानी (उर्दू) 7. असाधारण वीरता प्रदर्शित करने पर भारतीय गणतंत्र में दिया जाने वाला प्रथम श्रेणी का उपहार या उपाधि 8. जिसका कोई साथी या सहारा न हो (उर्दू) 9. निर्जन, एकांत, जहां कोई न हो 11. सूक्ष्म पेट वाली, रावण की पत्नी का नाम (सं.) 13. दूल्हा, देवता आदि से मांगा हुआ मनोरथ (सं.) 15. अवस्था, दशा, समाचार, वृतांत (उर्दू) 17. किसी वस्तु के देने के लिए प्रार्थना करना, चाहना 19 भूमि जोतने का प्रसिद्ध उपकरण 20. यतीम, बिना मां-बाप का 22. शक्ति, सामर्थ्य

Solution 12137

श	ब	न	मी		सं	सा	र
प	ल		ना		वां	त	ज
थ		मौ	का		द		त
	र		र	वा	दा	र	
उ	ज	ला			ता		सि
प	नी	र		ओ		मा	ह
दे	श		श	ह	र	दा	र
श		व	र	दा	न		ना

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में नवीन कार्यों में रूचि एवं सफलता मिलेगी, व्यापार में लाभ होगा, वर्ष केमध्य में सत्ता सुख मिलेगा, स्थाई लाभ कायोग है, वर्ष के अन्त में माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य से मन अशांत रहेगा, अधिकारियोंका सहयोग मिलेगा, भागदौड़ के बाद सफलता मिलेगी, अधिकारियों से मतभेद में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य से मन अशांति का अनुभव करेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को स्थाई लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को सत्ता पक्ष से सुख मिलेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अधिकारियों से मतभेद भी होंगे, कर्क राशि के व्यक्तियों को संतोष रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को परिश्रम का फल अधिक प्राप्त होने का योग है. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को भागदौड़ से अच्छी सफलता मिलेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वाभाव से अच्छा सुन्दर, हष्टपुष्ट तथा सुशील तथा मिलनसार होगा. मन भावुक तथा कोमल होगा. कम बोलेगा, तथा जोभी बात बोलेगा, वह बुद्धिमानी से परिपूर्ण होगी. पिता का भक्त होगा.

मेष- दूसरों के मामले में दखल से बचें. अटके कार्य पूराकरने में मित्रों का सहयोग मिलेगा. संतान आदि की चिन्ता दूर होगीं सुखदकार्यों में लाभ प्राप्त होगा.

वृषभ- भाग्यवर्धक अवसर मिलेंगे. दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी. परिश्रम अधिक करना होगा. आप जिन पर भरोसा कर रहे हैं, वे आपका विरोध करेंगे.

मिथुन- खानपान रहन सहन में अनियमितता रहेगी. उदर विकार आदि से कष्ट होगा. समय के स्वरूप को देखकर कार्य करें.

कर्क- आपके सरल स्वाभाव का लोग फायदा उठायेंगे. व्यापार व्यवसाय में सफलता मिलेगी. जीवनसाथी का सहयोग रहेगा. मानसिक प्रसन्नता रहेगी.

सिंह- आपका कठोर व्यवहार घर में कलह का कारण बन सकता है. नई योजना लाभकारी रहेगी. आकस्मिक अतिथि वृश्चिकमन होगा. पार्टनरशिप में सतर्कता बांछनीय.

कन्या- अधूरी योजना फिर से शुरू कर सकते हैं. बुजुर्गों के मार्गदर्शन से लाभ मिलेगा. मातृपक्ष से शुभ समाचार मिलेगा. कार्यों मे सफलता मिलेगी. संयम से काम लें.

तुला- पारिवारिक आयोजन लाभकारी हो सकते है. आकस्मिक लाभ की सूचना मिलेगी. मानसिक प्रसन्नता रहेगी. कोर्ट कचहरी के कार्यों में सफलता प्राप्त होगी.

वृश्चिक- अपने कार्य को वरीयता से निपटाने का प्रयास करें, अन्यथा परेशानियां सामने आयेंगी. भाग्यवर्धक समाचार मिलेगा.

धनु- वैभव के सामान पर बड़े खर्च की संभावना है. स्वजनों के सहयोग से आर्थिक कार्य पूर्ण होगा. मनोरंजन उत्साह बढ़ेगा. मेहनत अधिक करना पड़ेगी.

मकर- नए कार्य की शुरूआत और कानूनी मामलों में सबकी सलाह से वृश्चिके बढ़े, सफलता मिलेगी. आकस्मिक प्रवास हो सकता है.

कुम्भ- धार्मिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी. नये संपर्को का लाभ मिलेगा. महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता मिलगी. श्रेष्ठजनों से कामकाज बनने का योग है.

मीन- प्रतियोगी परीक्षा में सफलता के आसार हैं, विवादास्पद मामले सुलझ सकते हैं. स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. कार्यों में आकस्मिक गति आयेगी. मन में प्रसन्नता रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

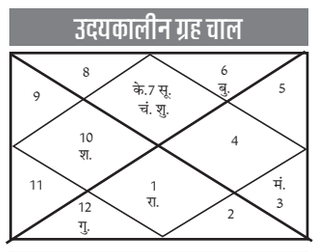

पंचांग

रा.मि. 22 संवत् 2082 माघ कृष्ण नवमीं चन्द्रवासरे दिन 1/54, स्वाती नक्षत्रे रात 10/25, धृति योगे रात 7/56, गर करणे सू.उ. 6/44, सू.अ. 5/16, चन्द्रचार तुला, शु.रा. 7, 9, 10,1,2,5 अ.रा. 8,11,12,3,4,6 शुभांक- 9,2,6.

व्यापार भविष्य

माघ कृष्ण नवमीं को स्वाती नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड़, रूई, शक्कर, कपास,जूट, पाट, बारदाना, सन, हैसियन,सोना, चांदी, के भाव में उठाल आयेगा. भाग्यांक 4110 है.

SUDOKU 7270

		2				1		
				2	5	7	3	
	9	4		6	7			2
	5		4		3			9
	8			9			7	
1			6		8		2	
6			7	4		9	5	
	4	5	8	3				
		8				6		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7269

9	1	6	2	3	7	4	5	8
8	2	3	4	5	9	1	7	6
4	5	7	1	6	8	3	9	2
5	6	8	7	1	2	9	3	4
1	7	4	9	8	3	2	6	5
2	3	9	5	4	6	8	1	7
7	4	1	8	9	5	6	2	3
3	8	5	6	2	1	7	4	9
6	9	2	3	7	4	5	8	1